ISSN: 2395-7852

# International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 5, September 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

# राजस्थान का भूगोल

**डॉ. राजेन्द्र प्रसाद**

आचार्य, भूगोल, बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर, राजस्थान

**सार**

इस की कुल लम्बाई बांसवाड़ा में 26 किमी तथा डुंगरपुर में 8 किमी ह इसका विस्तार 23°03' उत्तरी अक्षांश से 30°12' उत्तरी अक्षांश अक्षांशिय विस्तार 7°9 है) तक कुल लंबाई 826 कि°मी° व राजस्थान 69°30' पूर्वी देशांतर से 78°17' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है ( देशांतरिय विस्तार 8°47) कुल चौड़ाई 869 कि°मी° का है।

**परिचय**

राजस्थान भारत का क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य है। इसकी राजधानी जयपुर है, जिसे गुलाबी नगरी के नाम से भी जाना जाता है। राज्य का क्षेत्रफल 3 42 239 वर्ग किमी है। राजस्थान का क्षेत्रफल वर्गमील में 1,32,139. हैं। जो भारत का 1/10वां भाग हैं। राजस्थान भारत में उत्तर-पश्चिम भाग में स्थित हैं।

जनसंख्या

कुल जनसंख्या79,502,477 है। पुरुष 41,235,725 व महिला

38,266,753

हैं।[1]

भौगोलिक प्रदेश

राजस्थान के भोगोंलिक प्रदेशों का निर्धारण सर्वप्रथम प्रो वी.सी मिश्रा ने" राजस्थान का भूगोल"नामक पुस्तक में किया, जिसका प्रकाशन नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा १९६८ में किया गया सको भौगोलिक रूप से चार बड़े भागों में बाँटा गया है। 1.पश्चिम का थार मरुस्थल 2.अरावली पर्वतमाला 3.पूर्व का मैदान 4.दक्षिण पूर्व हाड़ौती का पठार[2]

राजस्थान के भौतिक प्रदेश

1. उत्तरी-पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र (क)महान मरुभूमि/ शुष्क मरुस्थल क्षेत्र (a) बालुका स्तूप युक्त प्रदेश (b) बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश (ख) अर्द्ध शुष्क मरुस्थल क्षेत्र (a) घग्घर का मैदान (b) शेखावाटी प्रदेश (c) नागौरी उच्च भूमि (d) लूनी बेसिन

2. मध्यवर्ती अरावली पर्वतीय प्रदेश (a) उत्तरी अरावली (b) मध्य अरावली (c) दक्षिणी अरावली

3. पूर्वी मैदानी प्रदेश (a) बाणगंगा बेसिन (b) चम्बल बेसिन (c) बनास बेसिन (d) माही बेसिन

4. दक्षिणी -पूर्वी पठारी क्षेत्र (a) लावा का पठार (b) विध्यन कगार भूमि[1,2]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

भौगोलिक स्थिति

भारत के उत्तरी पश्चिम भाग में स्थित है। कर्क रेखा इसके दक्षिणी भाग में बांसवाडा के मध्य और डुंगरपुर जिले को स्पर्श करती हुई गुजर रही है। इस की कुल लम्बाई बांसवाङा में 26 किमी तथा डुंगरपुर में 8 किमी ह इसका विस्तार 23°03' उत्तरी अक्षांश से 30°12' उत्तरी अक्षांश अक्षांशिय विस्तार 7°9 है) तक कुल लंबाई 826 कि°मी° व राजस्थान 69°30' पूर्वी देशांतर से 78°17' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है ( देशांतरिय विस्तार 8°47) कुल चौड़ाई 869 कि°मी° का है।

जलवायु

राजस्थान की जलवायु उष्ण है। गर्मियों में तापमान 25 से 46 डिग्री सेंटीग्रेड रहता है। सर्दियों में यह 4 से 28 के मध्य रहता है।[3][4]

राजस्थान वन नीति 2022 का प्रादुर्भाव हुआ । रूप से शुष्क और अर्ध-शुष्क है और भारतीय थार मरूस्थल का एक हिस्सा है, जिसका 61 प्रतिशत भू–भाग राजस्थान में स्थित है। अरावली के पूर्व का क्षेत्र और दक्षिण-पश्चिमी भाग कृषि जलवायु परिस्थितियों की दृष्टि से बेहतर है और राजस्थान के विकसित जंगलों का आश्रय है।

सम्भाग व जिले

राजस्थान में 10 सम्भाग व 50 जिले हैं। राजस्थान के संभाग व जिलों के नाम:-

1.जयपुर संभाग- जयपुर, जयपुर(ग्रामीण), दूदू, कोटपुतली -बहरोड़, दौसा, खैरथल -तिजारा, अलवर

2.जोधपुर संभाग- जोधपुर, जोधपुर(ग्रामीण), फलौदी, जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा

3.भरतपुर संभाग- भरतपुर, धौलपुर, करौली, डीग, गंगापुरसिटी, सवाईमाधोपुर

4.अजमेर संभाग- अजमेर, ब्यावर, केकड़ी, टोंक, नागौर, डीडवाना – कुचामन, शाहपुरा

5.कोटा संभाग- कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़

6.बीकानेर संभाग- बीकानेर, हनुमानगढ़,गंगानगर,अनूपगढ़

7.उदयपुर संभाग -उदयपुर, चित्तोड़गढ, भीलवाड़ा, राजसमंद, सलूम्बर

8.सीकर संभाग -सीकर, झुंझुनूं, नीम का थाना, चुरू

9.पाली संभाग -पाली, जालौर, सांचोर, सिरोही

10.बांसवाड़ा संभाग -बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़[3,5]

राजस्थान – क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत गणराज्य का सबसे बड़ा राज्य है। यह भारत के उत्तर-पश्चिम इलाके में स्थित है। इसमें थार रेगिस्तान नामक बहुत विशाल बंजर भूभाग शामिल है जिसे ग्रेट (great) भारतीय रेगिस्तान भी कहा जाता है जो पश्चिम में पाकिस्तान की सीमा तक सतलुज-सिंधु नदी घाटी तक फैला हुआ है। राजस्थान की सीमाएँ दक्षिण-पश्चिम में गुजरात उत्तर-पूर्व में हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश तथा उत्तर में पंजाब से लगती हैं। राजस्थान, भारत के 10.4% भूभाग में फैला हुआ है जिसका कुल क्षेत्रफल 342,239 वर्ग किलोमीटर है।

## विचार-विमर्श

थार मरुस्थल (Thar Desert), जो महान भारतीय मरुस्थल (Great Indian Desert) भी कहलाता है, भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तरी भाग में विस्तारित एक शुष्क व मरुस्थल क्षेत्र है। यह भारत और पाकिस्तान में 200,000 किमी$^2$ (77,000 वर्ग मील) पर विस्तारित है। यह विश्व का 17वाँ सबसे बड़ा मरुस्थल है और 9वाँ सबसे बड़ा गरम उपोष्णकटिबन्धीय मरुस्थल है। थार का 85% भाग भारत और 15% भाग पाकिस्तान में है।[2]

थार का 85% भाग भारत में आता है। भारत के अनुसार थार के मरुस्थल का राजस्थान मे विस्तार 62% है और राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 61.11% भाग मरुस्थल से घिरा हुआ है। जिनमे राजस्थान के चुरू,हनुमानगढ़,बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर,बाड़मेर , हालांकि यह मरुस्थल गुजरात, पंजाब, हरियाणा और पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त में भी फैला हुआ है।[3] पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में थार चोलिस्तान में विस्तारित है। थार का पश्चिमी भाग मरुस्थली कहलाता है और बहुत शुष्क है, जबकि पूर्वी भाग में कभी-कभी हलकी वर्षा हो जाती है और कम रेत के टीले पाए जाते हैं।[4] अरावली पहाड़ी के पश्चिमी किनारे पर थार मरुस्थल स्थित है। यह मरुस्थल बालू के टिब्बों से ढँका हुआ एक तरंगित मैदान है।[7,8,9]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

## जलवायु

थार मरुस्थल अद्भुत है। गर्मियों में यहां की रेत उबलती है। इस मरुभूमि में 52 डिग्री सेल्शियस तक तापमान रिकार्ड किया गया है। जबकि सर्दियों में तापमान शून्य से नीचे चला जाता है। जिसका मुख्य कारण हैं यहाँ की बालू रेत जो जल्दी गर्म और जल्दी ठंडी हो जाती है। गरमियों में मरुस्थल की तेज गर्म हवाएं चलती है जिन्हें "लू" कहते हैं तथा रेत के टीलों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती हैं और टीलों को नई आकृतियां प्रदान करती हैं। गर्मी ऋतु में यहां पर तेज आंधियां चलती है जो रेत के बड़े-बड़े टीलों को दूसरे स्थानों पर धकेल देती है जिससे यहां मरुस्थलीकरण की समस्या बढ़ती जाती है।

## जन-जीवन

जन-जीवन के नाम पर मरुस्थल में मीलों दूर कोई-कोई गांव मिलता है। थार के मरुस्थल में अगर कोई शहर विकसित हुआ है तो वह शहर जोधपुर शहर है यहां हिंदू एवम मुसलमान धर्म के लोग ही निवास करते हैं प्रकृति की मार को सहन करते हुए भी यहां पर कुछ जातियां समृद्धि के चरम को छू रही है उदाहरण के लिए गुर्जर समाज इस समाज के लोगों ने यहां पर खूब तरक्की की है यहां बिश्नोई समाज के लोग वन एवं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करते हुए पाए जाते हैं । थार के मरुस्थल में रहने वाले लोग वीर एवं साहसी होते हैं लोगों में देश प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी होती है पशुपालन यहां का मुख्य व्यवसाय है पशुओं में गाय बैल भैंस बकरी भेड़ घोड़े गधे इत्यादि जानवरों को पाला जाता है मुख्य रूप से यहाँ ऊंट पाले जाते है

## मरू समारोह

लौहयुगीन वैदिक भारत में थार मरुस्थल की स्थिति (नारंगी रंग में)

राजस्थान में मरू समारोह (फरवरी में) - फरवरी में पूर्णमासी के दिन पड़ने वाला एक मनोहर समारोह है। तीन दिन तक चलने वाले इस समारोह में प्रदेश की समृद्ध संस्कृति का प्रदर्शन किया जाता है।

प्रसिद्ध गैर व अग्नि नर्तक इस समारोह का मुख्य आकर्षण होते है। पगड़ी बांधने व मरू श्री की प्रतियोगिताएं समारोह के उत्साह को दुगना कर देती है। सम बालु के टीलों की यात्रा पर समापन होता है, वहां ऊंट की सवारी का आनंद उठा सकते हैं और पूर्णमासी की चांदनी रात में टीलों की सुरम्य पृष्ठभूमि में लोक कलाकारों का उत्कृष्ट कार्यक्रम होता है। वर्तमान में थार kr राजा महाराजा महारावल चैतन्यराज सिंह जी है जो की प्रजा प्रेमी है।

राजस्थान में मुश्किल से कोई महीना ऐसा जाता होगा, जिसमें धार्मिक उत्सव न हो। सबसे उल्लेखनीय व विशिष्ट उत्सव गणगौर है, जिसमें महादेव व पार्वती की मिट्टी की मूर्तियों की पूजा 18 दिन तक सभी जातियों की स्त्रियों के द्वारा की जाती है, और बाद में उन्हें जल में विसर्जित कर दिया जाता है। विसर्जन की शोभायात्रा में पुरोहित व अधिकारी भी शामिल होते हैं व बाजे-गाजे के साथ शोभायात्रा निकलती है। हिन्दू,सिख,जैन और बौद्ध एक-दूसरे के त्योहारों में शामिल होते हैं। इन अवसरों पर उत्साह व उल्लास का बोलबाला रहता है। एक अन्य प्रमुख उत्सव अजमेर के निकट पुष्कर में होता है, जो धार्मिक उत्सव व पशु मेले का मिश्रित स्वरूप है। यहाँ राज्य भर से किसान अपने ऊँट व गाय-भैंस आदि लेकर आते हैं, एवं तीर्थयात्री मुक्ति की खोज में आते हैं। अजमेर स्थित ब्रह्मा जी का मंदिर दुनियां का एक मात्र ब्रह्मा मंदिर है। यह विश्व का एकमात्र ऐसा स्थान है जहां पर कंबंधो(वे योद्धा जिनका धड़ सर कटने के बाद भी सैकड़ों किलोमीटर और सैकड़ों लोगों से या कई घंटों तक लड़ा हो) की पूजा होती है। [1]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

## परिणाम

### नृत्य-नाटिका

राजस्थान का विशिष्ट नृत्य घूमर है, जिसे उत्सवों के अवसर पर केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है।[2] घेर नृत्य (महिलाओं और पुरुषों द्वारा किया जाने वाला, पनिहारी (महिलाओं का लालित्यपूर्ण नृत्य), व कच्ची घोड़ी (जिसमें पुरुष नर्तक बनावटी घोड़ी पर बैठे होते हैं) भी लोकप्रिय है। सबसे प्रसिद्ध गीत 'कुर्जा' है, जिसमें एक स्त्री की कहानी है, जो अपने पति को कुर्जा पक्षी के माध्यम से संदेश भेजना चाहती है व उसकी इस सेवा के बदले उसे बेशक़ीमती पुरस्कार का वायदा करती है। राजस्थान ने भारतीय कला में अपना योगदान दिया है और यहाँ साहित्यिक परम्परा मौजूद है। विशेषकर भाट कविता की। चंदबरदाई का काव्य पृथ्वीराज रासो या चंद रासा, विशेष उल्लेखनीय है, जिसकी प्रारम्भिक हस्तलिपि 12वीं शताब्दी की है। मनोरंजन का लोकप्रिय माध्यम ख़्याल है, जो एक नृत्य-नाटिका है और जिसके काव्य की विषय-वस्तु उत्सव, इतिहास या प्रणय प्रसंगों पर आधारित रहती है। राजस्थान में प्राचीन दुर्लभ वस्तुएँ प्रचुर मात्रा में हैं, जिनमें बौद्ध शिलालेख, जैन मन्दिर, क़िले, शानदार रियासती महल और मंदिर शामिल हैं।[10]

### त्योहार

राजस्थान मेलों और उत्सवों की धरती है। यहाँ एक कहावत प्रसिद्ध हैं. सात वार नौ त्योहार. यहाँ के मेले और पर्व राज्य की संस्कृति के परिचायक हैं. यहाँ लगने वाले पशु मेले व्यक्ति और पशुओं के बीच की आपसी निर्भरता को दिखाते हैं. राज्य के बड़े मेलों में पुष्कर का कार्तिक मेला[3], परबतसर और नागौर के तेजाजी का मेला को गिना जाता हैं. यहाँ तीज का पर्व सबसे बड़ा माना गया है श्रावण माह के इसी पर्व के साथ त्योहारों की श्रंखला आरम्भ होती हैं जो गणगौर तक चलती हैं. इस सम्बन्ध में कथन है कि तीज त्योहारा बावरी ले डूबी गणगौर. होली, दीपावली, विजयदशमी, नवरात्र जैसे प्रमख राष्ट्रीय त्योहारों के अलावा अनेक देवी-देवताओं, संतो और लोकनायकों तथा नायिकाओं के जन्मदिन मनाए जाते हैं। यहाँ के महत्त्वपूर्ण मेले हैं तीज, गणगौर(जयपुर), जीण माता मेला (सीकर), बेनेश्वर (डूंगरपुर) का जनजातीय कुंभ, श्री महावीर जी (सवाई माधोपुर मेला), रामदेवरा या रूणेचा(जैसलमेर), जंभेश्वर जी मेला(मुकाम-बीकानेर), कार्तिक पूर्णिमा और पशु-मेला (पुष्कर-अजमेर) और श्याम जी मेला (सीकर) आदि।

राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा तहसील में संगरिया के पास में धनोप माताजी का एक प्रसिद्ध मेला भरता है जो नवरात्रा में भरता है धनोप माता राजा धुंध की कुलदेवी थी और इस मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज चौहान के शासन काल के समय बताया जाता है प्राचीन काल में यह नगर राजा धुंध की नगरी की जिसे ताम्रवती नगरी के नाम से भी जाना जाता था

### टूरिज्म फेस्टिवल

राजस्थान को फेस्टिवल टूरिज्म का प्रमुख केंद्र कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। पुष्कर मेला देश के सबसे बड़े आकर्षणों में से है। हर साल लाखों श्रद्धालु पुष्कर आकर पवित्र झील में डूबकी लगाते हैं। यहां दुनिया का सबसे बड़ा ऊंटों का मेला भी लगता है जिसमें 50,000 ऊँट हिस्सा लेते हैं। जनवरी, 2010 में इस मेले ने बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया। इलाहाबाद, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में हर 12 साल पर कुंभ होता है जबकि हर छह साल में अर्द्धकुंभ का आयोजन हरिद्वार और प्रयाग में होता है। इनमें विदेशी पर्यटक भारी तादाद में आते हैं। राजस्थान की संस्कृति में कई कलात्मक परंपराएँ शामिल हैं जो प्राचीन भारतीय जीवन शैली को दर्शाती हैं। राजस्थान को "राजाओं की भूमि" भी कहा जाता है। इसमें पर्यटकों के लिए कई पर्यटक आकर्षण और सुविधाएं हैं। भारत का यह ऐतिहासिक राज्य अपनी समृद्ध संस्कृति, परंपरा, विरासत और स्मारकों से पर्यटकों और पर्यटकों को आकर्षित करता है। इसमें कुछ वन्यजीव अभयारण्य और राष्ट्रीय उद्यान भी हैं ।[11]

राजस्थान का 70% से अधिक हिस्सा शाकाहारी है , जो इसे भारत का सबसे शाकाहारी राज्य बनाता है। [1]

जोधपुर के घूमर नृत्य और जैसलमेर के कालबेलिया नृत्य को अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिली है। लोक संगीत राजस्थानी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भोपा , चांग, तेराताली, घिन्दर, कच्चीघोरी, तेजाजी और पार्थ नृत्य पारंपरिक राजस्थानी संस्कृति के उदाहरण हैं। लोक गीत आमतौर पर गाथागीत होते हैं जो वीरतापूर्ण कार्यों और प्रेम कहानियों से संबंधित होते हैं; और धार्मिक या भक्ति गीत जिन्हें भजन और बानियों के रूप में जाना जाता है (अक्सर ढोलक , सितार और सारंगी जैसे संगीत वाद्ययंत्रों के साथ ) भी गाए जाते हैं।

कन्हैया गीत पूर्वी राजस्थानी बेल्ट के प्रमुख क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों में मनोरंजन के सर्वोत्तम स्रोत के रूप में संग्रहित तरीके से गाया जाता है। घूमर लोक गीत, मूमल लोक गीत, चिरमी लोक गीत और झोरावा लोक गीत भी उल्लेखनीय हैं। कठपुतली, राजस्थानी मूल का एक पारंपरिक स्ट्रिंग कठपुतली प्रदर्शन, राजस्थान में ग्रामीण मेलों, धार्मिक त्योहारों और सामाजिक समारोहों की एक प्रमुख विशेषता है । कुछ विद्वान कठपुतली की कला को हजारों वर्ष से भी अधिक प्राचीन मानते हैं। कठपुतली का उल्लेख राजस्थानी लोक कथाओं, गाथागीतों और यहां तक कि लोक गीतों में भी पाया गया है। इसी तरह की छड़ी कठपुतलियाँ पश्चिम बंगाल में भी पाई जा सकती हैं ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

ऐसा माना जाता है कि कठपुतली की शुरुआत 1500 साल पहले आदिवासी राजस्थानी भाट समुदाय द्वारा आविष्कार की गई एक स्ट्रिंग मैरियनेट कला के रूप में हुई थी। विद्वानों का मानना है कि लोक कथाएँ प्राचीन राजस्थानी आदिवासी लोगों की जीवन शैली को बताती हैं; कठपुतली कला की उत्पत्ति वर्तमान नागौर और आसपास के क्षेत्रों से हुई होगी। राजस्थानी राजाओं और सरदारों ने कठपुतली की कला को प्रोत्साहित किया; पिछले 500 वर्षों में, कठपुतली को राजाओं और संपन्न परिवारों के माध्यम से संरक्षण प्रणाली का समर्थन प्राप्त था। कलाकारों द्वारा संरक्षकों के पूर्वजों की प्रशंसा गाने के बदले में कठपुतली प्रेमी कलाकारों का समर्थन करेंगे। भट्ट समुदाय का दावा है कि उनके पूर्वजों ने राजस्थान के शासकों से सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करते हुए, शाही परिवारों के लिए प्रदर्शन किया था ।

राजस्थान वस्त्रों, अर्ध-कीमती पत्थरों और हस्तशिल्प के साथ-साथ अपने पारंपरिक और रंगीन आमतौर पर गाथागीत के लिए प्रसिद्ध है। राजस्थानी फर्नीचर अपनी जटिल नक्काशी और चमकीले रंगों के लिए जाना जाता है। ब्लॉक प्रिंट, टाई और डाई प्रिंट, बगरू प्रिंट, सांगानेर प्रिंट और ज़री कढ़ाई प्रसिद्ध हैं। राजस्थान पारंपरिक रूप से कपड़ा उत्पादों, हस्तशिल्प, रत्न और आभूषण, आयामी पत्थरों, कृषि और खाद्य उत्पादों में मजबूत है। शीर्ष पांच निर्यात वस्तुएं, जिन्होंने राजस्थान राज्य से दो-तिहाई निर्यात में योगदान दिया, वे हैं कपड़ा (तैयार कपड़ों सहित), रत्न और आभूषण, इंजीनियरिंग सामान, रसायन और संबद्ध उत्पाद। [2]जयपुर की नीली मिट्टी की मिट्टी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पारंपरिक कला और शिल्प के पुनरुद्धार के साथ-साथ सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए निवेश आकर्षित करने के लिए राजस्थान में पहली हस्तशिल्प नीति जारी की गई है। [3] हस्तशिल्प के विकास की अपार संभावनाओं को भुनाने के लिए राजस्थान में बड़ी संख्या में कच्चे माल जैसे संगमरमर, लकड़ी और चमड़ा उपलब्ध हैं। [3]

हाथ से छपाई का अनोखा संग्रहालय कपड़े पर पारंपरिक वुडब्लॉक प्रिंटिंग का जश्न मनाता है।

राजस्थान अपने कई ऐतिहासिक किलों , मंदिरों और महलों (हवेलियों) के लिए प्रसिद्ध है, ये सभी राज्य में पर्यटन के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

मंदिर वास्तुकला

जबकि राजस्थान में कई गुप्त और गुप्त काल के बाद के मंदिर हैं, 7वीं शताब्दी के बाद, वास्तुकला एक नए रूप में विकसित हुई जिसे गुर्जर-प्रतिहार शैली कहा जाता है। इस शैली के कुछ प्रसिद्ध मंदिर हैं ओसियां के मंदिर , चित्तौड़ का कुंभश्याम मंदिर, बरोली के मंदिर, किराडू का सोमेश्वर मंदिर , सीकर का हर्षनाथ मंदिर और नागदा का सहस्र बाहु मंदिर।

10वीं सदी से 13वीं सदी तक मंदिर वास्तुकला की एक नई शैली विकसित हुई, जिसे सोलंकी शैली या मारू-गुर्जर शैली के नाम से जाना जाता है। चित्तौड़ का समाधिश्वर मंदिर और चंद्रावती का खंडहर मंदिर इस शैली के उदाहरण हैं।

यह काल राजस्थान के जैन मन्दिरों के लिये भी स्वर्णिम काल था। इस काल के कुछ प्रसिद्ध मंदिर दिलवाड़ा मंदिर और सिरोही के मीरपुर मंदिर हैं । पाली जिले में सेवारी , नाडोल , घाणेराव आदि स्थानों पर भी इस काल के कई जैन मंदिर हैं।

14वीं शताब्दी और उसके बाद से, कई नए मंदिरों का निर्माण किया गया, जिनमें शामिल हैं महाकालेश्वर मंदिर उदयपुर , उदयपुर में जगदीश मंदिर , एकलिंगजी मंदिर, आमेर का जगत शिरोमणि मंदिर और रणकपुर जैन मंदिर ।[9,10]

## निष्कर्ष

राजस्थान में अधिक लोकप्रिय हिंदू संत हैं, जिनमें से कई भक्ति युग के हैं।

राजस्थानी संत सभी जातियों से आते हैं; महर्षि नवल राम और उम्मेद लक्ष्मण महाराज भंगी थे, कर्ता राम महाराज शूद्र थे, सुंदरदास वैश्य थे, और मीराबाई और रामदेवजी राजपूत थे। पिछड़ी जाति के नायक बाबा रामदेवजी संप्रदाय के लिए कथावाचक या भक्ति संगीत (या " भजन ") के रूप में काम करते हैं।

सबसे लोकप्रिय हिंदू देवता सूर्य , कृष्ण और राम हैं ।

राजस्थान के आधुनिक समय के लोकप्रिय संत क्रिया योग के परमयोगेश्वर श्री देवपुरीजी और क्रिया योग , कुंडलिनी योग , मंत्र योग और लय योग के स्वामी स्वामी सत्यानंद रहे हैं । राजस्थान में हिंदुओं और मुसलमानों को एक साथ ईश्वर की पूजा करने के लिए एकजुट करने के लिए एक बड़ा आंदोलन चला। संत बाबा रामदेवजी जितने हिंदुओं के आराध्य थे, उतने ही मुसलमानों के भी।

अधिकतर राजस्थानी लोग मारवाड़ी भाषा बोलते हैं ।

संत दादू दयाल एक लोकप्रिय व्यक्ति थे जो राम और अल्लाह की एकता का प्रचार करने के लिए गुजरात से राजस्थान आए थे । संत रज्जब राजस्थान में पैदा हुए एक संत थे जो दादू दयाल के शिष्य बने और भगवान के हिंदू और मुस्लिम उपासकों के बीच एकता का दर्शन फैलाया।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

संत कबीर एक अन्य लोकप्रिय व्यक्ति थे जो हिंदू और मुस्लिम समुदायों को एक साथ लाने और इस बात पर जोर देने के लिए जाने जाते थे कि भगवान के कई रूप हो सकते हैं (उदाहरण के लिए राम या अल्लाह के रूप में)।[11]

## प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. "संग्रहीत प्रति". मूल से 6 फ़रवरी 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 26 अप्रैल 2020.
2. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 4 जुलाई 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 26 अप्रैल 2020.
3. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 6 फ़रवरी 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 26 अप्रैल 2020.
4. ↑ Pardesh, Aapno. "राजस्थान की जलवायु" (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2020-05-23.
5. Eric Dinerstein, David Olson, et al. (2017). An Ecoregion-Based Approach to Protecting Half the Terrestrial Realm, BioScience, Volume 67, Issue 6, June 2017, Pages 534–545; Supplemental material 2 table S1b. [1]
6. ↑ Sinha, R. K., Bhatia, S., & Vishnoi, R. (1996). "Desertification control and rangeland management in the Thar desert of India". RALA Report No. 200: 115–123.
7. ↑ Sharma, K. K. and S. P. Mehra (2009). "The Thar of Rajasthan (India): Ecology and Conservation of a Desert Ecosystem". Chapter 1 in: Sivaperuman, C., Baqri, Q. H., Ramaswamy, G., & Naseema, M. (eds.) Faunal ecology and conservation of the Great Indian Desert. Springer, Berlin Heidelberg.
8. ↑ Sharma, K. K., S. Kulshreshtha, A. R. Rahmani (2013). Faunal Heritage of Rajasthan, India: General Background and Ecology of Vertebrates. Springer Science & Business Media, New York.
9. Verma, Cheenu (2018-12-12). "राजस्थान की संस्कृति है भारत की सबसे खूबसूरत संस्कृति, पढ़ें". https://hindi.nativeplanet.com. अभिगमन तिथि 2021-04-21. `|website=` में बाहरी कड़ी (मदद)
10. ↑ "अतुल्य भारत | घूमर". www.incredibleindia.org. मूल से 21 अप्रैल 2021 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2021-04-21.
11. ↑ भाषा. "Pushkar Mela | कार्तिक पूर्णिमा : पुष्कर मेला संपन्न". hindi.webdunia.com. अभिगमन तिथि 2021-04-21.

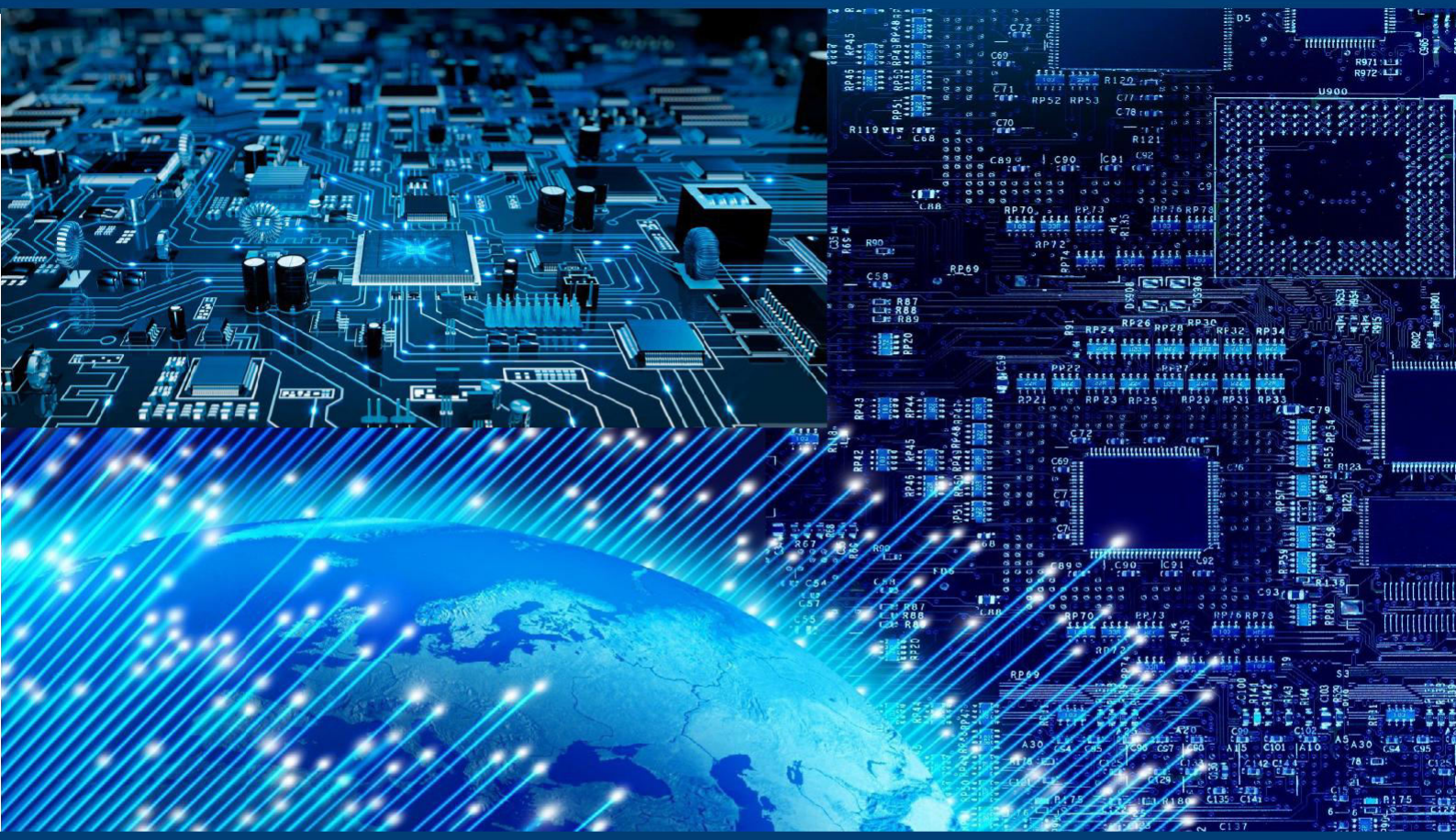


# International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)



| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |